

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये एकत्रिंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নारायणीये एकत्रिंशं दशकम् ॥

बलिरिध्रंसनम्

প্ৰীত্যা দৈত্যস্তর তনুমহঃ প্ৰেক্ষণাৎ সর্থাহপি

ৗরামারাধ্যন্নজিত রচযন্নঞ্জলিং সঞ্জগাদ।

মত্তঃ কিং তে সমভিলষিতং রিপ্ৰসুনো রদ ৗরং

র্যক্তং ভক্তং ভরনমরনীং রাহপি সর্থং প্ৰদাস্যে ॥ 31.1 ॥

তামক্ষীণাং বলিগিরমুপাকৰ্ণ্য কারুণ্যপূর্ণো -

হপ্যস্যোৎসেকং শমযিতুমনা দৈত্যরংশং প্ৰশংসন্।

ভূমিং পাদত্রযপরিমিতাং প্ৰার্থযামাসিথ ৗরং

সর্থং দেহীতি তু নিগদিতে কস্য হাস্যং ন রা স্যাৎ ॥ 31.2 ॥

রিশ্ৰৌশং মাং ত্ৰিপদমিহ কিং যাচসে বালিশস্ত্বং

সর্থাং ভূমিং বৃণু কিমমুনেত্যালপত্ত্বাং স দূপ্যন্।

যস্মাদ্দৰ্পাৎ ত্ৰিপদপরিপূৰ্ত্যক্ষমঃ ক্ষেপরাদান্

বন্ধং চাসারগমদতদর্হোহপি গাটোপশাত্ত্যে ॥ 31.3 ॥

পাদত্রয্যা যদি ন মুদিতো রিষ্টপৈর্নাপি তুষ্যে -

দিত্যুক্তেহস্মিন্ ররদ ভরতে দাতুকামেহথ তোযম্।

দৈত্যাচার্যস্তর খলু পরীক্ষার্থিনঃ প্ৰেরণাত্তং

মা মা দেযং হরিরযমিতি র্যক্তমেরাবভাষে ॥ 31.4 ॥

যাচত্যৌং যদি স ভগরান্ পূৰ্ণকামোহস্মি সোহহং

দাস্যাম্যৌর স্থিরমিতি রদন্ কার্যশপ্তোহপি দৈত্যঃ।

रिक्त्यारल्या निजदयितया दत्तपाद्याय तुभ्यं
चित्रं चित्रं सकलमपि स प्रार्पयतोयपूरम् ॥ 31.5 ॥

निस्सन्देहं दितिकुलपतौ र्वय्यशेषार्पणं तद् -
र्यातन्नाने मुमुचुरृषयः सामराः पुष्परर्षम्।
दिर्यं रूपं तर च तदिदं पश्यतां रिश्वभजा -
मुच्चैरुच्चैरर्धदरधीकृत्य रिश्वभजाभुम् ॥ 31.6 ॥

र्व्वपादाग्रं निजपदगतं पुञ्जीकोद्भरोहसौ
कुञ्जीतोयैरसिचदपुनाद्यज्जलं रिश्वलोकान्।
हर्षोत्कर्षां सुबहू ननुते खेचरैरुत्सरेहस्मिन्
भेरीं निघ्नन् भुरनमचरज्जाश्वरान् भक्तिशाली ॥ 31.7 ॥

तारदैत्यास्त्रनुमतिमृते भर्तुरारक्कयुक्ता
देरोपेतैर्भरदनुचरैस्ससङ्गता भङ्गमापन्।
कालात्माहयं रसति पुरतो यद्दशां प्राग्जिताः स्मः
किं रो युद्धैरिति बलिगिरा तेहथ पातालमापुः ॥ 31.8 ॥

पाशैर्बद्धं पतगपतिना दैत्यमुच्चैररादी -
स्तार्त्वीकं दिश मम पदं किं न रिश्वश्वररोहसि।
पादं मूर्ध्नि प्रणय भगरन्नित्यकम्पं रदन्तं
प्रह्लादन्तं स्वयमुपगतो मानयन्नस्तरीत्वाम् ॥ 31.9 ॥

दर्पोच्छ्रित्यै रिहितमथिलं दैत्य सिद्धोहसि पुण्यै -
लोकस्तेहस्त त्रिदिररिजयी रासरत्नं च पश्चात्।
मत्सायुज्यं भज च पुनरित्यन्नगृह्णा बलिं तं
रिप्रैस्सन्तानितमखररः पाहि रातालयेश ॥ 31.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकत्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥